

Padma Shri



SHRI SAKINI RAMACHANDRAIH

Shri Sakini Ramachandrai is a vocal folk singer and Dhol player well-known for "Kanchu melam-Kanchuthalam, a tribal art form belonging to the Koya (Primitive Tribal Group) people in Telangana and Andhra Pradesh.

2. Born on 1st January, 1963 to Sakini Musaliah and Sakini Gangamma, Shri Ramachandrai was brought up in Kunavaram Village of Manuguru Mandal, Bhadrachalam Dist, Telangana. He learnt the art of playing "Kanchu Thalam-Kanchumelam" from his forefathers.

3. Shri Ramachandrai is the only person left in the tribe who is capable of narrating the history of the sacred festival "Sammakka Sarakka Jathara" in Telugu and Koya languages. This ancient art form is almost at the stage of extinction and hence there is much need of protecting and promoting this dying art form for the upcoming generations. He is teaching this art to the youngsters who are interested in learning this particular art.

4. Shri Ramachandrai's story came into limelight by the documentary made by Retired Osmania University Professor Jayadheer Thirumala Rao under the guidance of the ITDA, Bhadrachalam. His speciality is that without taking a single break, he can sing the entire tale of Goddess Sammakka-Sarakka continuously for 24 hours in Telugu and Koya language as well. He shared his entire knowledge with the research scholars, media and the youngsters regarding the ancient history, origin and culture of the tribal community Koya.

पद्म श्री



श्री सकिनी रामचंद्राय

श्री सकिनी रामचंद्राय एक लोक गायक और ढोल वादक हैं। वह तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में कोया (आदिम जनजातीय समूह) लोगों से संबंधित जनजातीय कला "कंचुमेलम—कंचुथलम" के लिए सुप्रसिद्ध हैं।

2. 1 जनवरी, 1963 को सकिनी मुसलियाह और सकिनी गंगम्मा के घर जन्मे, श्री रामचंद्राय का पालन—पोषण तेलंगाना के भद्राद्री कोटागुडेम जिले के अंतर्गत मनुगुरु मंडल के कुनावरम गांव में हुआ। उन्होंने अपने पूर्वजों से "कंचुमेलम—कंचुथलम" वादनकला सीखी।

3. श्री रामचंद्राय अपनी जनजाति में अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो तेलुगु और कोया भाषाओं में पवित्र त्योहार "सम्मक्का—सरक्का जाथरा" का इतिहास बता सकते हैं। यह प्राचीन कला लगभग विलुप्त होने के कगार पर है, इसलिए भावी पीढ़ियों के लिए इस मरणासन्न कला का संरक्षण और प्रोत्साहन बहुत आवश्यक है। वह इस विशेष कला को उन युवाओं को सिखा रहे हैं जो इसे सीखने में रुचि रखते हैं।

4. श्री रामचंद्राय की जीवन गाथा उस्मानिया विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर जयधीर तिरुमला राव द्वारा आईटीडीए, भद्राचलम के मार्गदर्शन में बनाए गए वृत्तचित्र से सुर्खियों में आई। उनकी विशेषता यह है कि वह तेलुगु और कोया भाषा में देवी सम्मक्का—सरक्का की संपूर्ण कथा बिना रुके लगातार 24 घंटे गा सकते हैं। उन्होंने जनजातीय समुदाय कोया के प्राचीन इतिहास, उद्गम और संस्कृति का अपना पूरा ज्ञान शोधार्थियों, मीडिया और युवाओं के साथ साझा किया।